सृजन प्रवाह

www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com

पवन प्रवाह

# क्षत्राणी विदुला का उद्बोधन

**बच्चों के लिये हिन्दी भाषा में अच्छी पुस्तकों की अनुपलब्धता एवं भारत की पुरातन संस्कृति के संदर्भ को दृष्टिगत रखते हुए हैदराबाद के वरिष्ठ आई.पी.एस. अधिकारी विश्वजीत 'सपन' ने महाभारत की अनछुई कहानियों को 'पवन प्रवाह' के पाठको के लिए प्रस्तुत किया है। श्री विश्वजीत ने अपने साहित्य लेखन में महाभारत की कहानियों के साथ-साथ स्त्री पात्रों और लोक कथाओं का रोचक लेखन किया है। इसी कड़ी में पाठकों के लिए महाभारत की कथा 'क्षत्राणी विदुला का उद्बोधन' प्रेषित है। आइए इसका अवगाहन करें।**

पौराणिक प्रसंग

॥ विश्वजीत 'सपन' ॥

बहुत समय पहले की बात है। सिन्धु देश का राजा संजय था, जो सिन्धुराज के नाम से प्रसिद्ध था। उसकी माता का नाम विदुला था। विदुला अत्यंत ही वीर क्षत्राणी थी। वह बहुत ही गर्व और स्वाभिमान वाली स्त्री थी। संजय के जन्म के समय एक ब्राह्मण आया था। उसने सिन्धुराज के मुख को देखकर कहा था कि एक बार वह बड़ी भारी विपत्ति में पड़ेगा। उसके बाद पुनः उन्नति करेगा। विदुला को इस बात की चिंता सताती रहती थी।

सिन्धुराज सुख से राज्य कर रहा था। एक दिन अचानक उसके पड़ोसी शत्रु राजाओं ने मिलकर उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया। सिन्धुराज युद्ध में बुरी तरह से पराजित हो गया। उसने किसी तरह से अपनी जान बचाई और यद्धभूमि छोड़कर भाग आया। वह पूरी तरह से भयभीत था।

विदुला ने उसकी दशा देखी तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसे ब्राह्मण की बात याद थी। उसने सोचा शायद यही वह दशा है, जिसके बारे में उस ब्राह्मण ने कहा था। अपने पुत्र को साहस दिलाने और युद्ध जीतने को उद्बोधित करने के लिये उसने कहा-'युद्ध से भागकर आने वाला मेरा पुत्र नहीं हो सकता। अरे कायर, यदि तुमने एक क्षत्राणी का दूध पिया है, तो जा जाकर युद्ध कर।' सिन्धुराज की स्थिति बोल पाने की भी नहीं थी। पराजय ने उसे बुरी तरह से शक्तिहीन बना दिया था। उसकी इस स्थिति को देखकर विदुला ने उससे पुनः कहा-'तू कैसा पुत्र है जो अपनी माता के कहे पर विचार तक नहीं कर रहा? क्षत्रिय वही है, जो शत्रु के सामने डटा रहे। तुम्हारा नाम संजय है। युद्ध में जय करके अपने नाम को सार्थक कर। अब भी तू नहीं गया तो मैं अपनी जान दे दूंगी।'

अब संजय से नहीं रहा गया। उसने कहा-'तुम कैसी माँ हो? तुम्हें अपने पुत्र पर दया नहीं आ रही?'

'बेटे, क्षत्रिय धर्म का पालन करवाना क्षत्रिय माताओं का धर्म है। यदि तू इसका पालन न कर सका तो यह मर जाने के समान है।' 'तुम माँ होकर भी मुझे आग में कूदने को कह रही हो? यदि मैं ही नहीं रहा तो तुम्हें जीवन से क्या सुख मिल पायेगा?' संजय ने माता से प्रश्न किया।

'बेटे, समझदार के लिये सभी कुछ धर्म या अर्थ के लिये नहीं होते हैं। यदि तुमने इस समय अपनी वीरता नहीं दिखलाई तो तेरा तिरस्कार होगा, जो मुझे स्वीकार नहीं है।' विदुला ने बेटे को समझाया।

'तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन एक माता को अपने पुत्र से क्या ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए? क्या उस पर दया का भाव रखना चाहिए?' संजय ने पुनः प्रश्न किया।

विदुला बोली-'बेटा, जैसे तुम मुझे मेरा कर्तव्य बता रहे हो, वैसे ही मैं भी तुम्हें तुम्हारा कर्तव्य बता रही हूँ। जब तू अपने सभी शत्रु राजाओं को परास्त करेगा तब मैं तेरी प्रशंसा करूँगी।'बार-बार ललकारने एवं समझाने का प्रभाव धीरे-धीरे संजय पर हो रहा था। उसने कहा-'किन्तु माँ, मेरे पास तो कुछ नहीं रहा, न खजाना और न कोई सहायक। मेरी जय कैसे होगी?'

'बेटे, संपत्ति न हमेशा होती है और न ही साथ रहती है। कर्म का फल कभी मिलता है और कभी नहीं। किन्तु बुद्धिमान लोग अपने कर्म करना कभी नहीं छोड़ते।' विदुला दार्शनिक की भाँति बोली और उसे नाना प्रकार से समझाने लगी।

इस प्रकार विदुला के बार-बार उद्बोधित करने पर संजय पुनः युद्ध करने के लिये तैयार हो गया। परन्तु उस पर पराजय का भय अभी भी व्याप्त था। साथ ही उसे कोई उपाय भी नहीं सूझ रहा था कि वह कैसे उन राजाओं को पराजित करे। अतः उसने अपनी माता से पूछा-'माँ, मुझे तो कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। तुम ही कोई उपाय बताओ। जैसे तुम कहोगी, मैं वैसा ही करूँगा।'

तब विदुला ने उसे समझाते हुए विजयी राजा के समान आचरण करने को कहा-'पहले तो तुम्हें यह निश्चय करना होगा कि अभीष्ट कर्म सिद्ध होगा ही। यह निश्चय ही तुम्हारी आधी सफलता होगी। किसी पर्वत के किले में जाकर रहना होगा और अवसर की प्रतीक्षा करनी होगी। ईश्वर की आराधना करके तुम्हें अपने लोगों से मित्रता का भाव रखना होगा। आपत्ति आने पर भी घबराना नहीं और न ही वैसा आचरण करना होगा। हमारे पास अभी भी बड़ा खजाना बचा है, जो मैं तुम्हें देती हूँ। सही तरीके से उपयोग कर एक शक्तिशाली सेना तैयार करनी होगी और उसके बाद अवसर देखकर अपने शत्रुओं को पराजित करना होगा।'

माता ने प्रेमपूर्वक समझाया, तो छोटे मन वाले संजय का भय दूर हो गया। वह पराक्रमी बन गया। उसने अपनी माता के कहे अनुसार कर्म किया और सभी पड़ोसी राजाओं को हराकर अपना राज्य वापस ले लिया। उसके बाद उसने कई वर्षों तक सुखपूर्वक राज्य किया और उसके राज्य में प्रजा बहुत प्रसन्न और सम्पन्न रही।

इस प्रकार क्षत्राणी विदुला की प्रेरक बातें सुनकर उसका कायर पुत्र भी पराक्रमी बन गया। कहते हैं कि यदि कोई अपने शत्रु से पीड़ित हो और उसे यह प्रसंग सुनाया जाये तो वह कष्ट भूलकर अपने कर्म करता है। ●

# ऋतु परिवर्तन में अनिश्चितताः क्या शीतयुग का हो रहा है पदार्पण?

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

हम सभी जानते हैं कि किसी स्थान का ऋतु, औसत मौसम है जो एक निश्चित समय में उसको प्रभावित करता है जिसे हम ऋतु परिवर्तन कहते हैं। वर्षा, सूर्य की किरणें, वायु, आद्रता एवं तापमान ऐसे कारक हैं जो किसी स्थान की ऋतु को प्रभावित करते हैं। यह परिवर्तन पृथ्वी के अस्तित्व में आने के समय से ही रही है।

**ऋतु परिवर्तन के कारणः** पृथ्वी का ऋतु चक्र गतिशील है एवं प्राकृतिक रूप से उसमें एक चक्र में सतत परिवर्तन होता रहता है। विश्व इस बात से अधिक चिंतित है कि आज घटित हो रहे परिवर्तनों में मानवीय गतिविधियों के कारण तेजी आई है। इन परिवर्तनों का पूरे विश्व के वैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन किया जा रहा है, जो पेड़ के चक्रों, पराग नमूनों, बर्फ के किनारों एवं समुद्र की तलहटियों से साक्ष्य प्राप्त कर रहे हैं। ऋतु परिवर्तन के कारणों को दो भागों में बांटा जा सकता है- एक जो प्राकृतिक कारण हैं तथा दूसरे जो मानवीय कारण हैं।

**प्राकृतिक कारणः** ऋतु परिवर्तन के लिए अनेक प्राकृतिक कारक उत्तरदायी हैं। उनमें से कुछ प्रमुख हैं महाद्वीपीय अपसरण, ज्वालामुखी, समुद्री लहरें, पृथ्वी का झुकाव एवं धूमकेतु तथा उल्कापिंड। आइए इन्हें विस्तार से जानें।

**महाद्वीपीय अपसरणः** विश्व के मानचित्र पर दक्षिण अमेरिका एवं अफ्रीका के संबंध में आपने कुछ असाधारण पाया होगा-एक चित्रखंड पहेली की तरह क्या वे एक-दूसरे में समाहित होते प्रतीत नहीं होते? बीस करोड़ वर्ष पहले वे एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। वैज्ञानिक मानते हैं कि उस समय पृथ्वी वैसी नहीं थी जैसी कि आज हम देखते हैं, परंतु सभी महाद्वीप एक बड़े भूभाग के टुकड़े थे। इस का प्रमाण पौधों एवं जानवरों के जीवाश्मों तथा दक्षिण अमेरिका की पूर्वी तटरेखा तथा अफ्रीका की पश्चिमी तटरेखा जिन्हें अटलांटिक महासागर अलग करता है, से प्राप्त विशाल शैल पट्टियों से उपलब्ध होता है। ऊष्णकटिबन्धीय पौधों के जीवाश्मों (कोयले के रूप में) की खोज से यह निष्कर्ष निकलता है कि भूतकाल में यह भूमि निश्चित रूप से भूमध्य रेखा के निकट रही होगी जहां का मौसम ऊष्णकटिबन्धीय था तथा यहाँ दलदली व पर्याप्त हरियाली थी। आज जिन महाद्वीपों से हम परिचित हैं वे करोड़ों वर्ष पहले तब बने जब भूभाग शनैः-शनैः अलग होने लगे। इस विखंडन का प्रभाव मौसम पर भी पड़ा क्योंकि इसने भू-भाग की भौतिक विशेषताओं, उनकी अवस्थिति एवं जल निकायों का स्थान परिवर्तित कर दिया। भू-भाग के इस विलगाव ने समुद्री लहरों की धार व हवा में परिवर्तन किया जिसने मौसम को प्रभावित किया। महाद्वीपों का यह विखंडन आज भी जारी है। हिमालय श्रृंखला 1 मि.मी. प्रत्येक वर्ष उपर बढ़ रही है क्योंकि भारतीय भू-भाग धीरे-धीरे परंतु लगातार एशियाई भू-भाग की ओर बढ़ रहा है।

**ज्वालामुखीः** जब कोई ज्वालामुखी फटता है तो यह वातावरण में बहुत अधिक मात्रा में सल्फर डाइऑक्साइड, जल वाष्प, धूल एवं राख फेंकता है। यद्यपि ज्वालामुखी की गतिविधि कुछ दिनों तक ही रहती है तथापि, गैस एवं धूल की वृहद मात्रा कई वर्षों तक मौसम रचना को प्रभावित कर सकती है। किसी प्रमुख विस्फोट से सल्फर डाइऑक्साइड गैस लाखों टन में वायुमंडल की ऊपरी परत (समतापमंडल) में पहुँच सकती है।

**माउंट पिनातोबा ज्वालामुखीः** दूसरा आश्चर्यजनक घटना 1816 ई. में हुई जिसे अक्सर 'ग्रीष्म ऋतु विहीन' वर्ष कहा जाता है। न्यू इंग्लैन्ड एवं पश्चिमी यूरोप में महत्वपूर्ण मौसम-संबंधी विघटनाएं घटी तथा संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा में जानलेवा शीतलहर चली। इन अनोखी घटनाओं का कारण 1815 में इंडोनेशिया में टम्बोरा ज्वालामुखी में विस्फोट को माना जाता है।

**पृथ्वी का झुकावः** प्रत्येक वर्ष पृथ्वी सूर्य के चारों एक पूरी परिक्रमा करता है। यह अपने परिक्रमा मार्ग पर 23.50 के कोण पर लम्बवत झुकी हुई है। वर्ष के आधे समय जब गर्मी होती है उत्तरी भाग सूर्य की तरफ झुका होता है। दूसरे आधे समय जब ठंड होती है, तो पृथ्वी सूर्य से दूर होती है। यदि झुकाव नहीं होता तो हमें मौसम का अनुभव नहीं होता। पृथ्वी के झुकाव में परिवर्तन मौसम की तीव्रता को प्रभावित कर सकता है-अधिक झुकाव का अर्थ है अधिक गर्मी और कम ठंड। कम झुकाव का अर्थ है कम गर्मी और अधिक ठंड।

**प्रथ्वी का झुकावः** पृथ्वी की धुरी कुछ-कुछ अंडाकार है। इसका अर्थ हुआ कि एक वर्ष में सूर्य और पृथ्वी की दूरी बदलती रहती है। हम सामान्यतः सोचते हैं कि पृथ्वी की धुरी निर्धारित है क्योंकि यह हमेशा ही पोलैरिस (जिसे ध्रुव तारा या नॉर्थ स्टार भी कहा जाता है) की तरफ इंगित करता प्रतीत होता है। वास्तव में यह एकदम स्थिर नहीं हैं। धुरी भी प्रति शताब्दी आधे डिग्री से कुछ अधिक की गति से घूमती है इसलिए पोलैरिस हमेशा ही उत्तर की तरफ इंगित करता हुआ न तो रहा है और न ही रहेगा। जब 2500 ई.पू. वर्ष पहले, पिरामिड का निर्माण हुआ था, तो थुबन तारा (अल्फा ड्रैकोनिस) के निकट ध्रुव था। पृथ्वी की धुरी की दिशा में यह धीमा परिवर्तन, जिसे विषुवतीय अयन भी कहा जाता है, ऋतु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है।
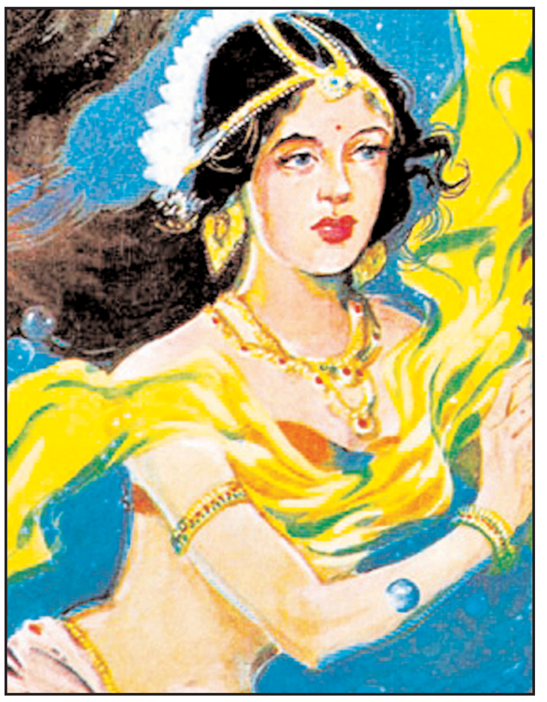
**समुद्री लहरेंः** ऋतु व्यवस्था का एक प्रमुख घटक समुद्री लहरें हैं। पृथ्वी के 71% भाग में ये फैले हुए हैं एवं वायुमंडल या भूमि से दोगुना सौर विकिरणों को अवशोषित करते हैं। समुद्री लहरें ताप की एक बड़ी मात्रा को ग्रह के अन्य भागों में फैलाते हैं- यह मात्रा वायुमंडल के लगभग बराबर है। लेकिन समुद्र भू-भाग से घिरे हुए हैं, अतः जल द्वारा ताप का संचरन मार्गों से होता है। वायु समुद्र तल के क्षैतिज स्तर पर बहती है एवं समुद्री लहरें बनाती है। विश्व के कुछ भाग अन्य भागों की अपेक्षा समुद्री लहरों से अधिक प्रभावित होते हैं। पेरू का तट एवं अन्य निकटवर्ती क्षेत्र हम्बोल्ट लहरों से प्रभावित है जो पेरू के तट के किनारे बहती है। प्रशान्त महासागर में अब नीनो की घटना दुनिया भर की मौसमी परिस्थितियों को प्रभावित कर सकती है। उत्तरी अटलांटिक ऐसा दूसरा क्षेत्र है जो समुद्री लहरों से बहुत प्रभावित है। यदि हम उसी अक्षांश पर स्थित यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका के स्थानों की तुलना करें तो प्रभाव तत्काल स्पष्ट हो जाएगा। इस उदाहरण पर गौर करें- तटीय नॉर्वे के कुछ भागों का जनवरी में औसत तापमान- 20C व जुलाई में 400C है। जबकि इसी अक्षांश पर अलास्का के प्रशांत तट का स्थान अत्यंत ठंडा है-150C जनवरी में एवं केवल 100C जुलाई में। नॉर्वे के तटों पर बहने वाली गर्म लहरें ठंड में भी ग्रीनलैंड नॉर्वे के समुद्र में बर्फ जमने नहीं देती। आर्कटिक महासागर का शेष भाग दक्षिण से सुदूर होते हुए भी जमा रहता है। समुद्री लहरें या तो अपना मार्ग बदल लेती हैं या धीमी पड़ जाती हैं। समुद्र से निकलने वाली उष्मा का एक बड़ा भाग जल वाष्प के रूप में होता है जो कि पृथ्वी पर प्रचुरता में पाया जाने वाला ग्रीनहाउस गैस है। तथापि जल वाष्प बादल बनाने में भी मदद करते हैं जो स्थल को ढक कर शीतल प्रभाव देते हैं। इनमें सभी या किसी एक घटना का प्रभाव ऋतु पर पड़ सकता है जैसा कि 14,000 वर्ष पहले प्रथम हिम युग की समाप्ति पर हुआ माना जाता है। आज हम पुनः ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जब विश्व में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, अरब देश, भारतवर्ष , चीन, जापान, वुल्गेरिया, थाईलैंड आदि देशों में भीषण वर्षात अथवा शरद ऋतु में बर्फबारी व तूफानों का प्रकोप चल रहा है 7 इस वर्ष भारतवर्ष में ही पिछले एक-दो माह से लगातार धुन्ध व बर्फ पड़ रही है। यह एक आश्चर्यचकित करने वाला समय गुजर रहा है, जिसमें श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर, देहरादून व नैनीताल की पहाड़ियों में बर्फ पड़ रही है और तापमान भी (-) 6-70C (डिग्री सेंटीग्रेड) 10-दिनों से चल रहा है और वहां का जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। यही नहीं सम्पूर्ण उत्तर भारत ही नहीं राजस्थान व मध्यप्रदेश भी इस समय शीत लहर के चपेट में आ गया है। लखनऊ में विगत 2-दिनों से तापमान 0.5-10C चल रहा है। उक्त भयावह परिस्थितियां उत्तरी ध्रुव के बर्फ में अत्यधिक पिघलाव का ही कारण माना जा सकता है जो विश्व में मौसम की अनिश्चितता का माहौल पैदा कर दिया है तथा इसका मुख्य कारण वैश्विक तापमान में बढोत्तरी है, जो ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन व मनुष्य द्वारा पृथ्वी के अवयवों का अनाप-सनाप दोहन करने से उत्पन्न हुयी है। क्या इसको हम द्वितीय हिम-युग का पदार्पण माने व मनुष्य द्वारा प्रकृति के नियमों का उल्लंघन व उसकी दूरदर्शिता में चूक? ●